© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 06 , Issue : 05 | May 2020

औद्योगिकीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव

**सुमित कुमार, जाट
शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
*डॉ. राजबाला साईवाल, प्राचार्या
देव इंटरनेशनल कॉलेज, अलवर (राजस्थान)

भूमिका :

पर्यावरण के प्रति सजगता आधुनिकीकरण की देन है। सजगता के अभाव में आधुनिक समाज द्वारा यह मान लिया गया है कि प्रकृति का प्रांगण हर प्रकार के अनाचार के लिये सुरक्षित है। गत चार दशकों में पर्यावरण अवनयन की घटनाओं से उपजली विविध कठिनाईयों विशेषकर जीवन आधारी तत्वों का प्रदूषण, पृथ्वी का बढ़ता तापमान, बढ़ते प्राकृतिक प्रकोप, पिघलते हिमनद जलवायु परिवर्तन विशेष उल्लेखनीय है। औद्योगिक प्रदेशों में अधिक लाभ पर आधारित भौतिक सुख एवं अतिदोहन प्रवृत्ति के विधान में किये गये अतिवादी हस्तक्षेप सम्पूर्ण मानवता के लिए खतरे का कारण बनते जा रहे हैं। आधुनिक समाज में बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता भौतिकवाद, उच्च तकनीक प्रकृति के प्रति उपेक्षा पूर्ण मानवीय व्यवहार ने प्रगति की गति को इतना तीव्र कर दिया है कि उससे कुप्रभाव स्पष्ट रूप से प्रगट होने लगे हैं।

सूचक शब्द :

औद्योगीकरण, शहरीकरण, वन्यजीव अभ्यारण, पतझड़ीय वन।

पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण के प्रभावी तत्वों में संसाधन दोहन, अत्यधिक ऊर्जा का प्रयोग, औद्योगीकरण, शहरीकरण प्रमुख है। पर्यावरण की इस ह्रासमान स्थिति को अवनयन या ह्रास या पर्यावरण अवक्रमण कहा जाता है। असन्तुलित औद्योगीकरण अनियन्त्रित नगरीयकरण एवं बढ़ती जनसंख्या के कारण जीवनदायी संसाधनों पर अतिभार की स्थिति पैदा हो गयी है।

पर्यावरण ह्रासमान के कुप्रभावों को बढ़ाने में यातायात के साधनों नगरीयकरण एवं औद्योगीकरण का प्रमुख योगदान है। नगर सामान्य रूप से एक उच्च जीवन पद्धति का प्रतीक है। लेकिन इसमें बढ़ता वायु, ध्वनि एवं जल प्रदूषण, अत्यधिक भीड़–भाड़, मलिन बस्तियों का विस्तार, सामाजिक अपराध, व्यभिचार इस उच्च जीवन की गुणवत्ता को नष्ट कर रहे हैं। ये नगर कचरा, अशुद्ध जल, वाहनिक शोर, कृषि भूमि का नगरीय एवं औद्योगीकरण कार्यों के लिए अधिग्रहण, अशुद्ध जल प्रवाह आदि केवल नगरों को ही प्रदूषित नहीं रखते वरन् समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों को भी प्रभावित एवं प्रदूषित करते हैं।

नगरों एवं महानगरों की घनी बस्तियों, कारखानों, वाहनों, वनस्पति विहीन धरातल एवं कूड़–करकट के कारण इतना अधिक प्रदूषण उत्पन्न होता है कि नगरों की वायु स्वच्छ नहीं रह पाती। अनेक नगर व महानगरों में प्रदूषण संकट बिन्दु तक पहुंचने लगा है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण वहाँ के वायुमण्डल में 692 कि. ग्रा. कार्बन मोनो ऑक्साइड, 250 कि.ग्रा. नाइट्रोजन ऑक्साइड विद्यमान रहती है। ये मानक मानव स्वास्थ्य को सीधे तौर पर चेतावनी देते हैं। वर्तमान में दशक की सबसे बड़ी प्राकृतिक विपदा 'कोराना वायरस' (कोविड–19), जिसने भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में लिया है जिसकी शुरूआत के बारे में वैज्ञानिकों के पास आज भी कोई जवाब नहीं है, ने सम्पूर्ण विश्व ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारत को लॉकडाउन कर दिया है। देश की जनता अपने घरों में बंद है। कोरोनावायरस लोगों के लिए एक बहुत बड़ी परेशानी बन गया है लेकिन पर्यावरण पर इसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं।

कोरोनावायरस की वजह से एक ओर जहां पूरी दुनिया में हजारों लोगों की मौत हो गई है। वहीं दूसरी ओर यह पर्यावरण के लिए अच्छा साबित हो रहा है।

इस प्रकार सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के साथ अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ प्रश्नचिन्ह बनती जा रही हैं। जिनमें उद्‌भव कारणों, निदान उपायों को शोध के माध्यम से जानना अति आवश्यक हो गया है। अतः मानवीय अनुक्रियाओं का मूल्यांकन पर्यावरण के सन्दर्भ में किया जाना आज की प्राथमिक आवश्यकता है। ये सभी समस्याएँ नगरीय क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के प्रमुख रूप से निम्न क्रिया–कलापों से उत्पन्न हुई हैं –

1. औद्योगीकरण से उत्पन्न समस्याएँ
2. नगरीयकरण से उत्पन्न समस्याएँ
3. तीव्र जनसंख्या वृद्धि जनित समस्याएँ
4. ऊर्जा संकट से उत्पन्न समस्याएँ
5. कृषि एवं पशु पालन से उत्पन्न समस्याएँ
6. तकनीकी विकास से उत्पन्न समस्याएँ
7. विविध वाहन विस्तार से उत्पन्न समस्याएँ
8. सामाजिक, धार्मिक उन्माद एवं राजनैतिक गतिरोध से उत्पन्न समस्याएँ

नीमराणा औद्योगिक नगरी क्षेत्र राजस्थान राज्य के अलवर जिले के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। अलवर जिला राजस्थान का सिंह द्वार भी कहलाता है। अरावली के उत्तरी भाग में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र का उत्तरी दक्षिणी भाग पथरीला एवं उत्तरी–पूर्वी भाग मैदानी है। वस्तुतः इस प्रदेश की अपवाह प्रणाली में मुख्यतः सोता व साबी नदियाँ हैं, जो प्रायः मौसमी नदियाँ हैं। मैदानी भाग में पशुपालन एवं कृषि की उत्तम दशाएँ हैं जहाँ मानव–बसाव सघन में देखने को मिलता है।

भौगोलिक अवस्थिति :

नीमराणा औद्योगिक नगरी क्षेत्र अलवर जिले के उत्तर–पश्चिमी भाग में अवस्थित है। औद्योगिक क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार उत्तर से 27′59′ उत्तरी से 27′36′ तथा देशांतरीय विस्तार 76′27′ से 76′39′ पूर्व में है। यह क्षेत्र 17′ अक्षांश तथा 12′ देशांतरीय विस्तार में फैला है। अध्ययन क्षेत्र 729 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है।

अलवर जिला यमुना–सतलुज मैदान को विभाजित करने वाली अरावली पर्वत श्रृंखला के मध्य फैला हुआ है, इसे ट्रांस यमुना मैदान भी कहा जाता है। लगभग चपटे शिखर वाली पहाड़ियों की स्थलाकृति प्रदेश की मुख्य विशेषता है, जो जिले के दक्षिणी–पश्चिमी भागों में मुख्यतः अरावली श्रेणियों की निरन्तरता बनाये रखते हुए अधिक सुव्यवस्थित और तीव्र ढ़ाल से युक्त है, इन्हीं पहाड़ों के बीच उपजाऊ घाटियां एवं ऊँचे पठार है, तथा इसी क्षेत्र में सरिस्का राष्ट्रीय वन्यजीव अभ्यारण आरक्षित क्षेत्र है।

अध्ययन क्षेत्र में वनों का संसाधन एवं पर्यावरणीय संतुलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। क्षेत्र में कुल वन क्षेत्र 71.188 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्र में वनों की अधिकता पहाड़ी भागों में छितरे हुए वन का भौगोलिक संतुलन की आवश्यकतानुसार कम है। इस क्षेत्र में उष्ण कटिबंधीय प्रकार के पतझड़ीय वन पाये जाते हैं। इन वनों में मुख्यतः वृक्ष सालर, गूलर, सोहजना, शीशम, धौंक, ढ़ाक, पलास, कीकर, नीम, पीपल, बांस, बिलायती किकर, बेर, खेजड़ी आदि सम्मिलित है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष का प्रमुख ध्येय शोध से पूर्व निर्धारित उद्‌देश्यों को ध्यान में रखते हुए उनकी प्राप्ति करना था। शोध के दौरान कुछ पहलु ऐसे सामने आये जिनके विषय में शोधार्थी पूर्व में परिचित नहीं था। उन पहलुओं को भी शोध में समाहित कर नवीन जानकारियों का समावेश किया गया है।

शोध क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करने पर पाया गया कि नीमराणा औद्योगिक क्षेत्र अलवर जिले के उत्तर–पश्चिमी भाग में अवस्थित है। अध्ययन क्षेत्र बहरोड़ नगरपालिका क्षेत्र का सबसे बड़ा कस्बा है। मुख्यतः यह क्षेत्र ग्रामीण है। नीमराणा इस क्षेत्र में सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। नीमराणा क्षेत्र में रीको के द्वारा औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना की गई। राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 8 इस क्षेत्र औद्योगिक के दक्षिण होकर गुजरता है। यह औद्योगिक क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के पश्चिमी दक्षिणी भाग में स्थित है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से इस की दूरी 120 किलोमीटर तथा राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग 150 किलोमीटर पूर्व में बसा है। इस क्षेत्र में देखी गई चट्टानें पूर्णतया देहली समुदाय की मध्यतलछटीय किस्म की है, जो पुरानी अरावली श्रेणियों से सुस्पष्ट असमानता के कारण उनसे पृथक् पहचान बना लेती है। ये खेतड़ी, तांबा पट्टी के साथ–साथ मध्य क्षेत्र तक और दक्षिणी–मध्य क्षेत्र में भी दिखाई देती है।

संदर्भ सूची :

1. अलेक्जेण्डर जे.डब्ल्यू. : लोकेशन ऑफ मैन्यू फैक्चरिंग – मैथड्स ऑफ मैजरमेण्ट्स एनाल्स ऑफ द एसोसियेशन ऑफ अमेरिका ज्यॉग्राफर्स, 1958।
2. ईजार्ड, डब्ल्यू : लोकेशन एण्ड स्पेस इकॉनामी, ए जनरल थ्योरी रिलेटिंग टू इंडस्ट्रीयल लोकेशन, मार्केट एरियाज, लैण्ड यूज, ट्रेड एण्ड अरबन स्ट्रक्चर, न्यूयार्क–1956।
3. कुच्छल, एस.सी. : इण्डस्ट्रीयल इकानामी इन इंडिया, इलाहाबाद, 1969।
4. घोष, बी.सी. : इंडियन लोकेशन, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, 1949।
5. चौधरी, एम.आर. : ''आयरन एंड स्ट्रील इंडस्ट्री'' 1964 ऑक्सफोर्ड बुक कम्पनी कलकत्ता, इण्डस्ट्रीयल ऐस्टेट्स इन वेस्ट बंगाल, 1965 ज्योग्राफीकल रिव्यू ऑफ इण्डिया 27 ''द इण्डस्ट्रीयल लैण्डस्कोप ऑफ वेस्ट बंगाल 1971 ऑक्सफोर्ड एण्ड आई.बी.एच. पब्लिशिंग कम्पनी, कलकत्ता।